बेबिलोनियन सभ्यता

(Babylonion Civilization)

सुमेरियन सभ्यता के पतनोपरान्त पश्चिमी सेमाइटो ने बेबिलोन में एक नवीन सभ्यता एवं संस्कृति की नींव डाली। बेबिलोनियन सभ्यता के निर्माता एमोराइट, अमोटी, अमर्रु, बेबीलोनियन अथवा केनानी जाति के थे। सुमेरियन जातियों के साथ घुल-मिल जाने वाली किश की सेमेटिक जातियों की एक शाखा यह भी थी। इनका भी मूल निवास स्थान उत्तरी सेमेटिक या किश की सेमेटिक की तरह अरब ही था। पेलेस्टाइन के पुरातात्विक अवशेषों से ज्ञात होता है कि 3 हजार ई०पू० के लगभग ये जातियाँ अपना मूल स्थल अरब को छोड़कर केनान में आकर बस गई इसलिए इन्हें केनानी कहा जाने लगा। केनान में उस समय भूमध्य सागरीय जातियाँ निवास करती थीं। धीरे-धीरे दोनों जातियाँ आपस में घुल-मिल गयीं और उन्हें केनानी या पश्चिमी सेमेटिक के नाम से पुकारा जाने लगा। चूंकि ये बेबीलोनिया में रहते थे इसलिए ये बेबिलोनियन कहलाए। इनका मूल नाम अमर्रु या अमोराइट था। सुमेरियन जातियों के पतन के सन्दर्भ में त्रिकोणात्मक संघर्ष के अन्तर्गत हम्मूराबी के नेतृत्व में उत्तर की ओर से आक्रमण करने वाली पश्चिमी सेमेटिक जातियों की विजय हुई तथा ईसिन और लारसन राज्य उनके राष्ट्र का अंग बन गये थे।

बेबिलोनियन संस्कृति के कर्ता-धर्ता सुमेरियन संस्कृति के अत्यन्त निकटतम माने जाते हैं। इस प्रकार दोनों का पारस्परिक अनुप्रेरित होना स्वाभाविक था। इनका राजनीतिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र ईशिन, लारसा, बेबिलोनिया, मारी तथा असुर नगर राज्य थे। इनमें प्रत्येक राज्यों के पृथक शासक थे तथा सभी सम्पूर्ण बेबिलोनिया पर एक छत्र प्रभुता के आकांक्षी थे।

राजनीतिक इतिहास

बेबिलोनिया पर निम्न ग्यारह राजवंशों ने शासन किया :

1. प्रथम राजवंश एमोराइट था जिसका शासनकाल 2225 ई.पू. से 1926 ई. पू. तक था।
2. द्वितीय राजवंश के शासकों का शासनकाल 1926 ई.पू. से 1761 ई. पू. तक था।
3. कस्साइट राजवंश के शासकों ने 1760 ई. पू. से 1185 ई. पू. तक शासन किया था।

3. चतुर्थ राजवंश ने 1184 ई. पू. से 1053 ई. पू. तक शासन किया था।
4. पंचम राजवंश के शासकों का शासन काल 1052 ई. पू. से 1032 ई. पू. तक था।
5. छठें राजवंश का शासनकाल 1031 ई. पू. से 1012 ई. पू. तक था।
6. सप्तम राजवंश एलमाइट वंश का शासन काल 1011 ई. पू. से 1006 ई. पू. तक था।
7. अष्टम् राजवंश ने 1005 ई. पू. से 762 ई. पू. तक शासन किया था।
8. नौवें राजवंश का शासनकाल 761 ई. पू. से 732 ई. पू. तक था।
9. असीरियन शासकों ने 732 ई. पू. से 625 ई. पू. तक शासन किया।
10. नव साम्राज्य युगीन शासकों का शासन काल 625 ई. पू. से 536 ई. पू. तक था।

बेबिलोनियन वंश का संस्थापक सुम-अवुक था। उसने 1894 ई0 पू0 के लगभग इस वंश की नींव डाली थी। इसके बाद सुमुल-इलु, जबुम, इमेरुम, अपिल-सिन और सिन-मुवल्लित ने क्रमागत शासन किया ये सभी स्वतन्त्र शासक थे। इन्होंने किश, सिप्पर कूथा और निप्पुर पर विजय प्राप्त कर बेबिलोनिया के साम्राज्य का विस्तार किया। साक्ष्यों के अभाव में इनकी परिलब्धियों के विषय में विस्तृत जानकारी का अभाव है। 1792ई0 पू0 में सिन-मुवल्लित की मृत्यु हो गयी तथा बेबिलोन का प्रशासनिक कार्य इसके सुयोग्य पुत्र हम्मूराबी के कन्धों पर आ पड़ा। इसके सत्तारुढ़ होते ही मेसोपोटामिया के इतिहास में एक क्रान्ति आयी। इस समय मेसोपोटामिया में तीन शक्तियाँ थी। एक ओर लारसा को केन्द्र मानकर एलमी उत्तर की ओर बढ़ना चाहता था तो दूसरी ओर बेबिलोन को केन्द्र मानकर एमोराइट सम्पूर्ण सुमेर तथा अक्काद पर अधिकार करना चाहते थे। इसी बीच ईसिन भी अपनी स्वतंत्रता के लिए यत्नशील था। अन्ततः इसमें एमोराइट ही सफल हुए तथा हम्मराबी के नेतृत्व में बेबिलोनिया एक महान् साम्राज्य के रूप में परिवर्तित हो गया।

हम्मूराबी की राजनीतिक गतिविधियाँ—हम्मूराबी बेबिलोनिया राज्य पर सिंहानारुढ़ होने के समय पैतृक सम्पत्ति के रूप में उसने सिप्पुर, निप्पुर और अक्काद प्रदेश प्राप्त किया था। इसके राज्यारूढ़ होने के पूर्व ही कुदुर मावुक जो एलमी का राजा था, ने दक्षिण सुमेर को जीत लिया था। उसका पुत्र रिमसिन अब लारसा में अपनी शक्ति दृढ़ करके शेष सुमेर और अक्काद को अपने राज्य का अंग बनाने का प्रयास कर रहा था। इन दोनों में से किसी को भी 'इसिन राजा' अपनी सत्ता को देने के लिए तैयार न था। अतः परिस्थिति वश हम्मूराबी ने साम्राज्य विस्तार के लिए इन दोनों को पराजित करना आवश्यक समझा। उसने अपनी सैनिक शक्ति का दीर्घकालीन समय में संगठित रूप प्रस्तुत कर लिया। तो उसके बाद वह अपना सैन्य अभियान शुरु करता है। लगभग चार वर्षों तक उसके सभी युद्ध असफल हो गये कारण कि जिस ऐरक और ईसिन को वह जीतना चाहता था, उसका सबसे बड़ा अवरोधक एलम एवं लारसा का शासक रिमसिन था। फलतः उसे एरेक और ईसिन पर हुए प्रथम अभियान में कोई सफलता नहीं मिली। साथ ही उसके पैतृक राज्य निप्पुर जैसे कई

राज्य अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दिए। इस प्रकार दक्षिण बेबिलोनिया हम्मूराबी के अधिकार क्षेत्र से अलग हो गया। इस युद्ध से यद्यपि हम्मूराबी को हानि उठानी पड़ी परन्तु इस हानि के साथ उसे कुछ लाभ भी हुआ। क्योंकि अब उसके सम्मुख प्रतिद्वन्द्वी के रूप में केवल रिमसिन ही रह गया जो दक्षिण में उत्तरी-बेबिलोन का नेतृत्व कर रहा था। यहूदी अनुभूति के अनुसार हम्मूराबी ने कुछ दिनों तक रिमसिन की अधीनता भी स्वीकार किया था क्योंकि उसमें लिखा गया है कि एलम के शासक (केडोरला ओमर) ने अरब जातियों को पराजित करने के लिए गिन्नार (बेबिलोन) के शासक अम्रफेल (हम्मूराबी), एलारस (लारसा) के शासक एरिपोक, गोरियम (हित्ती) के शासक टीडाल और यहूदी नेता अब्राहम का एक संघ बनाया था। इससे ज्ञात हो जाता है कि हम्मूराबी को एलमी शासक रिमसिन की अधीनता स्विकार करनी पड़ी थी; इसीलिए अरब के विरुद्ध रिमसिन संघ में सम्मिलित होने के लिए उसे बाध्य होना पड़ा था। हम्मूराबी के अभिलेख से भी इस कथन की पुष्टि होती है। उसके अभिलेख के अनुसार उसने अपने शासन काल के 11वें से 30वें वर्ष तक किसी भी युद्ध-विजय का वर्णन नहीं किया है। उसने 31वें वर्ष में सफल अभियान का श्रीगणेश किया था। इसमें उसने एलम और लास्सा पर अधिकार कर लिया और रिमसिम को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। पश्चिम में उसने सीरिया और पेलेस्टाइन तक के प्रदेशों को अपने राज्य का अंग बनाया। उसकी विधि-संहिता, से विदित होता है कि निप्पुर, एरिडू, सिप्पर, लारसा, एरेक, ईसिन, किश, कूथा, लगस, अक्काद, अशुर तथा निनेवेह नगर उसके राज्य के अंग थे। इसमें प्रथम दो नगर निप्पुर और एरिडू उसके प्रमुख धार्मिक केन्द्र थे। शेष नगर उसके साम्राज्य की विशालता सूचित करते थे। इस प्रकार वह 43 वर्षों तक सफलतापूर्वक शासन किया। अन्ततः उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र सम्सु-इलुन बेबीलोन के सिहांसन पर बैठा।

हम्मूराबी के जीवनोपयोगी सुधार–हम्मूराबी ने अपनी प्रजा की भलाई हेतु अधोलिखित कार्य किए-

1. उसने कानूनों का संकलन किया तथा सुगठित शासन व्यवस्था स्थापित की।
2. सिंचन सौविधा हेतु उसने बांधों का निर्माण करवाया।
3. कृषि विकास हेतु उसने कीश से फारस की खाड़ी तक नहर बनवाई।
4. प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से उसने साम्राज्य को प्रान्तों एवं जिलों में विभक्त कर सुयोग्य अधिकारियों की नियुक्तियाँ की।
5. उसने निष्पक्ष न्याय व्यवस्था की स्थापना की।
6. कर्जदारों की सुविधा हेतु उसने रेहन रखने की प्रथा प्रारम्भ की।
7. उसने देवालयों को अपनी जमा राशियाँ गरीबों को ऋण के रूप में देने को विवश किया।

हम्मूराबी के उत्तराधिकारी एवं बेबिलोनिया का अन्त–सम्सु-इलुन अपने पिता की भाँति दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी था। उसने 8 वर्ष तक सफलतापूर्वक शासन किया था।

इस कालावधि में उसने न केवल पिता द्वारा विजित दूरस्थ प्रदेशों पर कठोर नियन्त्रण बनाए रखा वरन् मन्दिरों एवं नहरों का भी निर्माण कार्य किया। बेबिलोन के पूर्व में स्थिति कसाइट जातियों के उपद्रव से उसका साम्राज्य अस्त-व्यस्त हो गया यद्यपि उसने इनके विद्रोह को दबाने का प्रयास किया था किन्तु समय-समय पर वह कुछ कसाइटों को बसने का भी मौका देता रहा। कसाइटों की सफलता को देखकर हम्मूराबी द्वारा पराजित शत्रुओं को भी अपनी-अपनी स्वतन्त्रता घोषित करने का अच्छा मौका प्राप्त हुआ। इन शत्रुओं में रिमसिन प्रथम तथा रिमसिन द्वितीय प्रमुख हैं। इस समय सभी प्रदेशों में विद्रोह प्रारम्भ हो गये। बेबिलोन एवं किश के दो विद्रोह तो दबा दिये गये परन्तु फारस की खाड़ी के तटवर्ती प्रदेश में 'इलुमा-इलुम' के नेतृत्व में होने वाले विद्रोह को उसके उत्तराधिकारी नहीं दबा सके। सम्मु-इलुन के पुत्र अवि-एशु के शासन काल में विद्रोहियों की गतिविधियाँ तीव्रतर होती गयीं। जिससे उसके राज्य की सीमा संकुचित होती गयी। शासन क्रम में अम्मि दित्तान्द अम्मिअदुर्ग तथा सम्सु दिताना जैसे उत्तराधिकारियों ने बोबिलोन की प्रभुता बचाने में पूर्णत असफल हो गये। हित्तियों ने इनकी सम्पत्ति लूटी तो कसाइटों ने अवसर का लाभ उठाकर बेबिलोनिया पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार बेबिलोनियन सत्ता का पूर्णतः अन्त हो गया।

हम्बूराबी की मृत्यूपरान्त उसका पुत्र शम्सुइलुना सिंहासनासीन हुआ। उसने 2080 ई.पू. से 2043 ई.पू. तक शासन किया। उसने अपने पिता की भाँति न्याय एवं प्रशासन पर कठोर नियंत्रण रखा। उसके शासन काल में कस्साइट जाति अपने शक्ति शिखर पर पहुँच गई।

शम्सुइलुना प्रथम राजवंश का अन्तिम महान् राजा था। उसने दो नहरों का निर्माण करवाया और बेबीलोनिया एवं सिप्पर के मन्दिर को सुसज्जित किया। उसके समय में उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्र में विकास हुआ और जनता सुखी तथा समृद्ध थी।

शम्सुइलुना के बाद उसका पुत्र निसि-अमी-जादुगा गद्दी पर बैठा। इसके जमाने में बेबीलोनिया का महत्त्व बढ़ा। तत्पश्चात् उसका पुत्र सम्सुदिताना गद्दी पर बैठा, जो इस वंश का अन्तिम शासक था। इसके समय में अनातोलिया की हिट्टाइट लोगों ने काफी लूटपाट मचायी। उन्होंने बेबीलोन शहर को नष्ट कर दिया और वहाँ से बहुत से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी उठा ले गए। सम्भवतः बेबीलोन का राजा सम्सुदिताना राजधानी की रक्षा करते हुए मारा गया। हिट्टाइट लोग लूट का माल लेकर अपने देश लौट गए।

हिट्टाइट आक्रमण से बेबीलोनिया में अराजकता फैल गई। इसका लाभ उठाकर केस्साइट लोगों ने 1763 ई. पू. में बेबीलोनिया पर अधिकार कर लिया।

फारस की खाड़ी के उत्तर में दलदल से भरे हुए इलाके को बेबीलोनिया के इतिहास में 'सामुद्रिक प्रदेश' कहते थे। सामुद्रिक प्रदेश के राजा का दक्षिणी बेबीलोनिया पर अधिकार था। इलुमा-इलुम नामक सरदार ने दक्षिणी बेबीलोनिया में फारस की खाड़ी के किनारे अपना राज्य स्थापित किया। दक्षिणी प्रदेश का यह राज्य, जिसे सामुद्रिक राज्य कहते थे, लगभग 1710 ई. पू. तक स्थापित रहा। इया गासिल के राज्यकाल में इस राज्य का अन्त हो गया था। केस्साइट लोगों ने ही सामुद्रिक प्रदेश के राज्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।